International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 508-510

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 508-510
www.allresearchjournal.com
Received: 16-02-2017
Accepted: 17-03-2017

सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

Correspondence
सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

राम नरेष त्रिपाठी के काव्य में जन–जागृति की अभिव्यक्ति

सुनीता देवी

प्रस्तावना

राम नरेष त्रिपाठी जी के समय भारत की प्रजा अंग्रेजों के चंगुल में कुछ इस प्रकार जकड़ी हुई थी कि छुटकारे के लिए मात्र उन्हें देष से बाहर कर देने के कोई अन्य रास्ता नहीं दिखाई पड़ता था। त्रिपाठी जी ने इस तथ्य को भली भांति समझा और अपने साहित्य में माध्यम से जन जीवन को जागृत करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने यह बताना चाहा कि बिना सामूहिक जागरण के विदेषियों से छुटकारा पाना असंभव है इसलिए मजदूर किसान, अधिकारीगण, महिलाएं सभी अंग्रेजों के विरूद्ध आगे बढ़ कर देष की स्वतंत्रता के लिए प्रयास करना चाहिए। उनके तीनों खंड काव्य इसी जन जागरण के लिए प्रयत्नषील दिखाई पड़ते हैं और यह निर्विवाद सत्य है कि त्रिपाठी के मनो भावों का जन जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं के माध्यम से पड़ा।

जन समुदाय को जागृत करने के लिए त्रिपाठी जी अनेक दृश्टियों से प्रयत्नषील दिखाई देते हैं। उनके विचार में जन जागरण के लिए सर्व प्रथम आवष्यकता संगठन त्याग और बलिदान की हैं जब तक जनता इन तीनों को ग्रहण नहीं करती, विदेषियों को बाहर करने में उसे सफलता नहीं मिलेगी। संगठन पर बल देते हुए अपनी कविता ''स्वदेष गीत'' में कहते हैं–

''सब को स्वतंत्र करदे, यह संगठन हमारा,
छूटे स्वदेष की ही सेवा मे तन हमारा।'' [1]

संगठन के महत्व का प्रतिपादन करने के साथ ही साथ त्रिपाठी जी हमें यह उद्बोधन देते हैं कि हमारा यह परम कर्त्तव्य है कि हम मातृभूमि की सेवा में कटिबद्ध हो जाएं चाहे प्राण ही क्यों न त्याग न पड़े।

उनका लक्ष्य केवल राजनीतिकक स्वाधीनता को प्राप्त करना है
जिसके लिए वे अपने संगठन के साथ मरने के लिए उद्यत दिखाई देते हैं। युवकों तथा देषवासियों को सवाधीनता के प्रति जागृत करते हुए वे आगे कहते हैं–

''हम प्राण होम देंगे, हंसते हुए जलेंगे,
हर एक सांस पर हम आगे बढ़ें चलेंगे।
जब तक पहुंच न लेंगे तब तक न सांस लेंगे,
वह लक्ष्य सामने है, पीछे नहीं रहेंगे।।'' [2]

यह प्रयाण गीत उनकी प्रेरक भावनाओं का उद्दीप्त रूप है जिससे वे लोगों में चेतना फूंक कर उन्हें स्वाधीनता के लिए तैयार कर रहे थे। इस संदर्भ में उनकी सर्व श्रेश्ठ विषेशता यह दिखाई दती है कि उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मृत्यु के वरण की भी चिंता नहीं। वास्तविकता भी यही है कि जब तक प्रेरक स्वयं सम्मुख नहीं आता तब तक उससे लोग प्रेरणा ग्रहण करने के लिए सम्मुख नहीं आते। इस दृश्टि से त्रिपाठी जी का सारा जीवन आदर्ष है। लोगों को जागृत करने के लिए त्रिपाठी जी ने न केवल प्रेरणा दी अपितु उन्हें भारत की प्राचीन परंपरा की याद दिला कर उत्साहित किया। हमारे पूर्वज कभी भी पराधीन बन कर नहीं रहना चाहते थे, तो क्या आज हम इतने हीन हो गए हैं कि विदेषियों के अत्याचार सहते रहें–

''वे न जानते थे भू तल पर, जीवित रहना पराधीन बन,
न्याय और स्वातंत्रय जगत में, उनके थे दो ही जीवन धन।'' [3]

यही नहीं कि केवल पुरूशों को ही त्रिपाठी जी ने प्रेरित कर स्वाधीनता के लिए जागृत किया अपितु नारियों को भी प्रेरणा दी और उन्हें उत्तेजित कर षत्रु का सामना करने के लिए उद्यत किया। ''मिलन'' में विजया विदेषी आक्रमणकारी से देष की स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए स्वयं त्रिषूल लेकर तो आगे बढ़ती ही है साथ ही साथ अने साथ संगठित समूह भी रखती है–

''लिए त्रिषूल हाथ में करने चली देष उद्धार,
गांव–गांव में लगी घूमने सेवा व्रत उर धार।
द्वार–द्वार जाकर विजया करूा प्रेम निधान,
सबको लगी जगाने गाकर देष भक्ति मय गान।। '' [4]

स्वप्न में विदेषी आक्रमण के समय स्त्रियों ने राजपूत नारियों की याद दिलाई है। त्रिपाठी जी ने इन उदाहरणों के माध्यम से स्त्रियों का आह्वान कर उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में कूदने के लिए प्रेरित किया–

''अपने षयनागर बंद कर,
दिए नवोढ़ाओं ने तत्क्षण।
बांध दिए पतियों की कटि में,
असि कलाइयों में रण कंकण।। ''[5]

त्रिपाठी जी की यह प्रेरणा माताओं, बहनों, नवोढ़ाओं सभी के लिए थी। क्योंकि वे सहयोग में विष्वास रखते थे। स्त्री–पुरूश दोनों के सहयोग से ही दुष्मनों का दमन संभव है ऐसा उनका विष्वास था स्वप्न में माताएं तथा बहनें, पतियों एवं वीरों को हंसते–हंसते रण में भेजती हैं। स्त्रियां तरसा करती हैं कि उनके घर में कोई बलिदान क्यों नहीं हुआ। [6]
नवयुवक किसी भी देष के कर्णधार होते हैं। त्रिपाठी जी ने नवयुवकों को विषेश रूप से स्वाधीनता के लिए प्रेरित किया है। उनका जागरण संदेष नवयुवकों को अपने कर्त्तव्य के प्रति झकझोर देता है–

''या स्वदेष ही में जब कोई, स्वेच्छाचारी निपट निरंकुष,
षासक राज षंकंति से रक्षित, लम्पट लो लुप क्रूर का पुरूश।
निज कर्त्तव्य विरूद्ध प्रजा पर करता है अन्याय घोरतम
तब नवयुवक स्वतंत्र देष के, क्या बैठे रहते हैं घर पर?'' [7]

इतना ही त्रिपाठी जी ने नवयुवकों को उत्साहित करने केलिए आर्यों की उस पुनीत परंपरा की भी याद दिलाई, कि आर्य कभी भी परमुखापेक्षी, पराधीन बन कर नहीं जीते, तुम आर्य होकर पराधीन हो, इससे बढ़कर षर्म की बात और क्या हो सकती है?–

''पर पद दलित परमुखापेक्षी,
पराधीन परतंत्र पराजित।
होकर कहीं आर्य जीते हैं?
पामर पषुसम पतित पराश्रित।। '' [8]

त्रिपाठी जी का पथिक देष का भ्रमण करता है और देष की पराधीन जनता के दुखों को देखकर व्याकुल हो जाता है। वह जनता में जागरण पैद करके उसे निरंकुष षासन के विरूद्ध अभारना चाहता है। वह कहता है कि देषवासियों, तुम मनुश्य होकर भी पषु तुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हो। त्रिपाठी जी ने पथिक के माध्यम से जनता को जागृत करने का जो प्रयत्न किया वह अविस्मरणीय है। उनका पथिक पराधीन जनता को संबोधित करते हुए कहता है–

''तुम अपने सुख के प्रबंध के हो न पूर्ण अधिकारी,
यह मनुश्यता पर कलंक है प्रिय बंधु तुम्हारी।
पराधीन रह कर अपना सुख षोक न कह सकता है,
यह अपमान जगत में केवल पषु ही सह सकता है।।'' [9]

इतना ही नहीं त्रिपाठी जी स्वतंत्रता के लिए मर मिटना गौरव की बात समझते हैं और पराधीनतमा को करोड़ों नरकों से भी हेय बताते हैं वे देषवासियों से सवधर्म रक्षा के लिए अनुरोध करते दिखाई देते हैं–

''एक घड़ी की भी परवषता कोटि नरक क सम है,
पल भर की भी स्वतंत्रता सौ स्वर्गों से उत्तम है।
जब तक जग में मान तुम्हारा तब तक जीवन धारो,
जब तक जीवन है षरीर में तब तक धर्म न हारो।। '' [10]

उपर्युक्त कथनों में दो बातें विषेश दृश्टव्य हैं। पहली यह कि त्रिपाठी जी भारतीयों की गिरती हुई दषा के सुधार के लिए जन जागरण की आवष्यकता पर बल देते हैं दूसरी यह कि वे मान के षाष्वत धर्म को सर्वोपरि मानते हुए जन को सदैव जागरूक रहने का आह्वान करते हैं।
त्रिपाठी जी ने अपनी इन तीनों रचनाओं के माध्यम से जहां एक और जनता को जागृत किया वहीं दूसरी ओर देष की स्थिति से उन्हें परिचित भी कराया। जनता को विदेषी षासक कभी भी देष की दुर्दषा से परिचित नहीं कराते थे इसलिए वह अंधकार में रहती थी। त्रिपाठी जी ने अपने पथिक के माध्यम से देषवासियों को देषका भ्रमण कराया और उन्हें देष की दुर्दषा का अवलोकन कराया। यहां यह करने में अत्युक्ति नहीं होगी कि उन्होंने पथिक के माध्यम से जिस राजनीतक जागरण का स्वर उद्बोधित किया वह तत्कालीन अन्य कृतियों में नहीं दिखाई देती।
देष की स्वाधीनता के लिए समाज के सभी वर्ग के लोगों की जागृति अपेक्षित थी, इसलिए त्रिपाठी जी ने न केवल युवकों और स्त्रियों का आह्वान कि अपितु राजा महाराजाओं का भी आह्वान किया जिन्होंने परंपरा से ही भारत का नाम रोषन किया था। अपनी ''आह्वान'' षीर्शक कविता में वे कहते हैं–

''यह विशुवत रेखा का वासी, हांफ–हांफ जीने वाला।
स्वतंत्रता के लिए विकल है हव्वी व्कैले सा काला।
यह ठिगना जापान उचक कर छूता है तारों का ताज।
पर तुम कहां छिपे हो मेरे महाराजा राजों के राज।'' [11]

यहां पर कवि का उद्देष्य केवल विदेषी षासकों की प्रषंसा करना ही नहीं है, वह तो उनकी उननतावस्था की ओर संकेत करके यह बताना चाहता है कि कभी वे भारत की तुलना में कुछ भी नहीं थे पर आज अपनी जागृति से वे दुनियां के उन्नत देषों में गिने जा रहे हैं। भारतीयों को जागरण का संदेष देते हुए वे कहना चाहते हैं कि लोग उठ खड़े हों और स्वतंत्र बनकर उन्नति करें। इसलिए वे ''विधवा का दर्पण'' षीर्शक कविता में देषवासियों में जोष भरते हुए कहते हैं–

''कश्ट अब पर पद्दलित स्वदेष,
भूमि में अंमि सहने को।
चलो वीरों जन कर स्वाधीन,
जगत में जीवित रहने को।'' [12]

त्रिपाठी जी ने कन्याओं और बालकों को भी जागरण के लिए प्रेरित किया। उनका बाल साहित्य बाल जागरण से ओत प्रोत है। इन रचनाओं में इन्होंने बच्चों को भी अंग्रेजों के कुषासन से परिचित कराने की चेश्टा की है तथा उन्हें स्वतंत्र होने की प्रेरणा भी दी है। यह वर्णित किया जा चुका है कि अंग्रेजी षासन में भारतीय प्रजा की दषा बड़ी सोचनीय थी। [13] अंग्रेज षासक भारतीय प्रजा को अमानुशिक व्यवहारों से सदैव त्रस्त किए रहते

थे। त्रिपाठी स्वराज्य के लिए उकसाते हुए बच्चों से प्रष्नोत्तर षैली में कहते हैं–

प्रष्न–राजा कौन अच्छा है?
उत्तर–जो प्रजा को सुख दे। [14]

आगे चल कर पुनः गिनती के माध्यम से वे बालकों में जागरण का संचार करते हैं–

''एक, दो, तीन,
क्यों हो पराधीन?
आठ, नौ, दस, गिनती करो बस।
सुखी है स्वतंत्र दुखी परबस।। '' [15]

जन जागरण की अपेक्षा को बताते हुए उसकी प्रेरणा देने के क्षेत्र में त्रिपाठी साहित्य का अपना जो उल्लेखनीय स्थान है उसकी एक विषेशता यह है कि उसमें समाज के सभी वर्ग के लोगों के लिए जागृति का संदेष है।

निश्कर्श

कहा जा सकता है कि तत्कालीन परिस्थितियों में भारतीयों को राजनीतिक दृश्टि से इतना दबा दिया जाता था कि वे विरोध की स्थिति में नहीं रह जाते थे। उनके मानस में आतंक का एक ऐसा स्वरूप स्थापित कर दिया जाता था जो उन्हें कभी भी विरोध की ओर बढ़ने ही नहीं देता था, फिर भी देष प्रेमी अनेक कठिनाइयों को सहते हुए स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ते ही थे। त्रिपाठी जी ने देखा कि भारतीय जनता केवल भारतीय संगठनों तथा आयुधों के विषाल साम्राज्य के अधिपति अंग्रेजों का सामना नहीं कर सकती इसलिए उन्होंने विदेषों में जाकर षक्ति संचय के लिए भारतीय को प्रेरित किया। उन्होंने युवकों को सुझाव दिया कि वे विदेषों में जाकर कला कौषल में पारंगत हों और भारत लौट कर देष के उद्धार में हाथ बंटाएं।

संधर्व सूची

1. आधुनिक कविः रामनरेष त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, पृश्ठ– 88
2. आधुनिक कविः रामनरेष त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, पृश्ठ–89
3. स्वप्न (नवीन संस्करण), पृश्ठ–45,,
4. मिलन (दसवां संस्करण), पृश्ठ– 72,,,,
5. स्वप्न (नवीन संस्करण), पृश्ठ– 46
6. देखिए–वही–पृश्ठ–52
7. स्वप्न (नवीन संस्करण), पृश्ठ–53
8. स्वप्न (नवीन संस्करण), पृश्ठ–53
9. पथिक (उन्नीसवां संस्करण), पृश्ठ–47
10. स्वप्न (नवीन संस्करण), पृश्ठ–53
11. पृश्ठ– 139 (2–मानसी, द्वितीय संस्करण, पृश्ठ– 44)
12. मानसी (द्वितीय संस्करण), पृश्ठ–63
13. वही–पृश्ठ–112
14. कन्या षिक्षावली भाग–2 (तृतीय संस्करण), पृश्ठ–57
15. कन्या षिक्षावली भाग–1 (चतुर्थ संस्करण), पृश्ठ–41